Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 09/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

नैदानिक मनोविज्ञान में कई मॉडल का प्रयोग मानव व्यवहार की व्याख्या के लिए किया जाता है जिनमें यहाँ निम्न मॉडल की व्याख्या की जाती है-

मनोगत्यात्मक मॉडल **(Psychodynamic Model):**

फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक संदर्भ (Psychoanalytic Perspective) तथा इसका उन्नत प्रारूप को ही नैदानिक मनोवैज्ञानिकों ने मनोगत्यात्मक मॉडल (Psychodynamic model) की संज्ञा दी है।

मनोगत्यात्मक मॉडल के कुछ पूर्व-कल्पनाएँ (assumptions) है जिनके आधार पर नैदानिक मनोविज्ञानी मानव व्यवहार की व्याख्या करते हैं। ऐसी प्रमुख पूर्व कल्पनाएँ निम्न हैं-

(i) मानव व्यवहार का निर्धारण वैसे आवेगों (impulses) अभिप्रेरणों (motives) इच्छाओं एवं संघर्षों (conficls) से होता है जो व्यक्ति के मन में होते हुए भी चेतन में नहीं होता अर्थात वे अचेतन स्तर पर है।

(ii) सामान्य (normal) तथा असामान्य (abnormal) दोनों तरह के व्यवहार की उत्पत्ति अंतरामानसिक होने वाले संघर्षों, इच्छाओं, आवेगों आदि द्वारा होता है।

(iii) यह मॉडल प्रशिद्ध कहावत 'एक बालक मनुष्य का जनक होता है (A child is father of man) के सिद्धान्त पर आधारित है। अर्थात् इस मॉडल कि मान्यता यह है कि वाल्यावस्था में मौलिक आवश्यकताओं एवं आवेगों की तुष्टि या कुटित (frustrate) होने की प्रक्रिया के आधार पर विशेष तरह के व्यवहार करने की नीव (foundation) वयस्क में पड़ती है। दूसरे शब्दों में आरंभिक बाल्यावस्था की घटनाओं द्वारा ही वयस्कावस्था के व्यवहार की नींव पड़ जाती है।

(iv) इस मॉडल में अन्तरा मानसिक क्रियाओं की सूक्ष्म पहलुओं जिनका व्यक्ति सीधे प्रत्यक्षण तो नहीं कर पाता है, को उजागर करने पर बल डाला जाता है क्योंकि जबतक इन क्रियाओं को स्पष्ट प्रत्यक्षण नहीं किया जाता है, मानव व्यवहार को नहीं समझा जा सकता है तथा समस्यात्मक बालक का उपचार भी नहीं किया जा सकता है।

मनोगत्यात्मक मॉडल की व्यवस्था निम्नांकित तीन प्रमुख भागों में बाँट कर की गई है-

(1) फ्रायडियन मनोविश्लेषण **(Freudian Psychoanalysis):**

9वीं सदी के अन्त तक यह स्पष्ट हो गया कि बहुत सारे मानसिक रोग हैं जिनका आधार दैहिक (Physiological) होकर मनोवैज्ञानिक होता है। अतः मनोवैज्ञानिकों के बीच स्वभाविक रूप से एक प्रश्न उठा-मनोवैज्ञानिक कारणों से मानसिक रोग किस तरह उत्पन्न होता है ?

इस प्रश्न के उत्तर के लिए फ्रायड ने तरह तरह के घोल कर जिस उपागम (approach) का प्रतिपादन किया उसेमनोविश्लेषण (psychoanalysis) कहा जाता है। फायडियन मॉडल की प्रमुख मान्यता यह है कि मानव व्यवहार की उत्पत्ति जन्मजात लैंगिक तथा आक्रामक मूलप्रवृतियों (instincts) की संतुष्ट करने को इच्छा एवं माहा दुनियाँ की वास्तविकताओं पूर्व नियमों को सम्मानित करने के बीच सतत संघर्ष का परिणाम होता है। प्रायडियन मनोगत्यात्मक मॉडल कुछ सामान्य नियमों (Principles) पर आधारित है। इन नियमों में निम्नांकित चार प्रमुख है-

(1) मानसिक नियतिवाद (Psychic determinism)

यह नियम इस बात पर बल डालता है कि मानव व्यवहार चाहे कितना भी अयंगत क्यों दिसते कोई कोई कारण से होता है कारण ऐसा भी हो सकता है जिसे बाहर से नहीं देखा जा सके तथा स्वयं व्यवहार करने वाले व्यक्ति को इसका पठन प हो। फायड के इस दृष्टिकोण के अनुसार तब सभी व्यवहार यहाँ तक कि आकस्मिक व्यवहार (accidental behaviors) भी अर्थपूर्ण होते हैं क्यों ऐसे व्यवहार से व्यक्ति में दिये हुए मानसिक संमषों एवं अभिप्रेरणों का पता चलता है। ऐसे छिपे हुए मानसिक संघषों एवं अभिप्रेरणों को फ्रायड ने अचेतन (unconscious) कहा है। अपने संबंधी का नाम भूल जाना, दूसरों से ली गयी चीज लौटाना भूल जाना अपनी चीज कहीं छोड़ देना आदि आकस्मिक व्यवहार है जिसका अर्थ व्यक्ति स्वर्य नहीं बतला पाता। ऐसे व्यवहार किसी न किसी अचेतन इच्छा एवं संघर्ष से निर्देशित होते हैं।

(2) मानसिक संरचनाः उपाहं, अहं एवं पराई (Mental Structure Id, Ege and Super ego):

फ्रायड के अनुसार मानव व्यवहर मानसिक संरचना के उपर्युक्त तीनों पहलुओं के अन्तःक्रिया (interaction) का परिणाम होता है।

<u>उमाहं **(Id)**</u> ही सभी तरह के मूलप्रवृत्तिक प्रजोदों (instinctual driver) का स्रोत होता है। इसमें दो तरह के परस्पर विरोधी प्रजोद होते है। जीवन मूलप्रवृत्ति (life instinct) तथा मृत्यु मूल प्रवृत्ति (death enstinal) जीवन मूल प्रवृत्ति में रचनात्मक प्रयोद (constructive driver) होते हैं जिमका स्वरूप लैंगिक (Sexual) होता है और जिससे (libid) का निर्माण होता है। मृत्यु मूलप्रवृत्ति में विश्वसंगात्मक प्रजोद (destructive drive) होते हैं जिनसे व्यक्ति में आक्रात्मकता, बर्बादी आदि की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। उपाहं सुखमय नियमों (pleasure principle) द्वारा निर्देशित होता है क्योंकि यह तात्कालिक संतुष्टि (परिणाम की चिन्ता किये बिना) पर बल डालता है। उपाहं तरह-तरह की मानसिक प्रतिभाओं (Mental images) एवं इच्छापूरक कल्पनाओं की उत्पत्ति तो कर सकता है पर यह मूलप्रवृत्ति प्रजोदों को तुस्टि के लिए कोई वास्तविक क्रिया नहीं कर सकता है।

<u>अहं **(Ego)**</u>: अहं का विकास उपाह के वाद होता है। वास्तव में यह परोंह के भाँगों एवं बाह्य दुनियाँ को वास्तविकता के वीच एक तरह की मध्यस्थता करता है। एक शाल का उम्र होने पर अंह का विकास प्रारंभ हो जाता है। अंह को चूँकि बाह्य भाँगों या वातावरण के माँगों से समायोजन स्थापित करना होता है, इसलिए यह वास्तविकता के नियम (reality principle) द्वारा निर्देशित होता है। वातावरण के भाँगों के साथ समान योजन स्थापित करने में यह बुद्धि, तर्क आदि का सहारा लेता है और साथ-साथ उपाहं के भाँगों पर नियंत्रण भी रखता है।

पराहं **(Superego):** पराहं वास्तविकता के समाजीकृत (Socializing influence) का परिणाम होता है पराहं में परिवार एवं संस्कृति द्वारा नैतिकता एवं मूल्यों आदि के वारे में वतलाये गये सभी तरह के उपदेश सम्मिलित होते

हैं। यही सभी उपदेश एवं शिक्षा का आंतरीकरण इस ढंग से हो जाता है कि उस से 'अहं आदर्श' (ego ideal) का निर्माण होता है। पराहं में अन्तःकरण या विवेक (Conscience) भी सम्मिलित होता है जिसके कारण व्यक्ति एक पूर्ण एवं सामाजिक रूप से समायोजी व्यवहार जिसका विरोध उपाहं (Id) द्वारा किया जाता है, कर पाता है।